Degree-1st Subsidiary

सामाजिक व्यवस्था (Social System)

व्यवस्था का अर्थ (Meaning of System) —

सामान्य शब्दों में कहा जा सकता है कि व्यवस्था का तात्पर्य एक संरचना के अन्तर्गत कुछ तत्वों का इस प्रकार सम्बद्ध रहना है जिससे वे कार्यात्मक रूप से एक-दूसरे को क्रियाशील बनाये रखें। इस परिभाषा के आधार पर व्यवस्था की प्रकृति को निम्नांकित विशेषताओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :

(1) व्यवस्था का सम्बन्ध एक संरचना (structure) से होता है। संरचना की अनुपस्थिति में किसी वस्तु अथवा संगठन को व्यवस्थित करने का प्रश्न ही नहीं उठता।

(2) व्यवस्था का निर्माण यद्यपि एक से अधिक अनेक इकाइयों द्वारा होता है लेकिन इन सभी इकाइयों में नियमबद्धता और एक निश्चित क्रम पाया जाता है।

(3) व्यवस्था का निर्माण करने वाले अनेक इकाइयाँ ~~में नियमबद्धता और एक निश्चित क्रम पाया जाता है।~~ एक-दूसरे से इस प्रकार सम्बद्ध होती हैं जो कार्यात्मक रूप से हमारे लिए महत्वपूर्ण हों। उदाहरण के लिए, साइकिल के विभिन्न पुर्जों के योग को ही हम व्यवस्था नहीं कहेंगे। साइकिल कार्यात्मक रूप से महत्वपूर्ण तभी होगी जब इसके विभिन्न पुर्जों को एक निश्चित और क्रमबद्ध रूप से संजोया जाय।

(4) व्यवस्था एक ऐसी स्थिति का बोध कराती है जिसमें विभिन्न तत्व अनेकता से एकता में परिवर्तित हो जायें। ऊपर के उदाहरण के अनुसार साइकिल अपने आप में

Created By Sign Doc

कोई अलग वस्तु नहीं है बल्कि जब बहुत सी इकाइयाँ जैसे - फ्रेम, हैण्डिल, पहिये, चेन फ्रीव्हील और ब्रेक एक निश्चित क्रम में सम्बद्ध हो जाते हैं तब यह उनके तत्व मिलाकर एक साइकिल का रूप ले लेते हैं। इस प्रकार व्यवस्था से सम्बन्धित तत्वों की प्रकृति अनेकता से एकता में परिवर्तित होने की होती है।

(5) व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण व्यवस्था इसका कार्यात्मक रूप से उपयोगी होना है। कुछ तत्वों का संयोग मात्र ही व्यवस्था का निर्माण नहीं कर सकता किसी संयोग को 'व्यवस्था' तभी कहा जा सकता है जब यह व्यक्तियों के लिए उपयोगी हो।

(6) व्यवस्था में परिवर्तनशीलता का गुण होता है। व्यवस्था का सम्बन्ध हमारी किसी न किसी आवश्यकता - पूर्ति से होता है। इसलिए व्यक्तियों की आवश्यकताओं और रुचियों में परिवर्तन होने के साथ ही व्यवस्था की प्रकृति में भी परिवर्तन हो जाना आवश्यक हो जाता है। कोई व्यवस्था यदि व्यक्तियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असफल हो जाय तो वही व्यवस्था अव्यवस्था के रूप में बदल जाती है। यह विशेषता व्यवस्था के व्यावहारिक और कार्यात्मक पक्ष से सम्बन्धित है।

Created By Sign Doc